**Saraswati Chalisa Lyrics: सरस्वती माता चालीसा।**

**॥ दोहा ॥**

**जनक जननि पद कमल रज,निज मस्तक पर धारि।
बन्दौं मातु सरस्वती,बुद्धि बल दे दातारि॥**

**पूर्ण जगत में व्याप्त तव,महिमा अमित अनंतु।
रामसागर के पाप को,मातु तुही अब हन्तु॥**

**॥ चौपाई ॥**

**जय श्री सकल बुद्धि बलरासी।जय सर्वज्ञ अमर अविनासी॥**

**जय जय जय वीणाकर धारी।करती सदा सुहंस सवारी॥**

**रूप चतुर्भुजधारी माता।सकल विश्व अन्दर विख्याता॥**

**जग में पाप बुद्धि जब होती।जबहि धर्म की फीकी ज्योती॥**

**तबहि मातु ले निज अवतारा।पाप हीन करती महि तारा॥**

**बाल्मीकि जी थे बहम ज्ञानी।तव प्रसाद जानै संसारा॥**

**रामायण जो रचे बनाई।आदि कवी की पदवी पाई॥**

**कालिदास जो भये विख्याता।तेरी कृपा दृष्टि से माता॥**

**तुलसी सूर आदि विद्धाना।भये और जो ज्ञानी नाना॥**

**तिन्हहिं न और रहेउ अवलम्बा।केवल कृपा आपकी अम्बा॥**

**करहु कृपा सोइ मातु भवानी।दुखित दीन निज दासहि जानी॥**

**पुत्र करै अपराध बहूता।तेहि न धरइ चित सुन्दर माता॥**

**राखु लाज जननी अब मेरी।विनय करूं बहु भाँति घनेरी॥**

**मैं अनाथ तेरी अवलंबा।कृपा करउ जय जय जगदंबा॥**

**मधु कैटभ जो अति बलवाना।बाहुयुद्ध विष्णू ते ठाना॥**

**समर हजार पांच में घोरा।फिर भी मुख उनसे नहिं मोरा॥**

**मातु सहाय भई तेहि काला।बुद्धि विपरीत करी खलहाला॥**

**तेहि ते मृत्यु भई खल केरी।पुरवहु मातु मनोरथ मेरी॥**

**चंड मुण्ड जो थे विख्याता।छण महुं संहारेउ तेहि माता॥**

**रक्तबीज से समरथ पापी।सुर-मुनि हृदय धरा सब कांपी॥**

**काटेउ सिर जिम कदली खम्बा।बार बार बिनवउं जगदंबा॥**

**जग प्रसिद्ध जो शुंभ निशुंभा।छिन में बधे ताहि तू अम्बा॥**

**भरत-मातु बुधि फेरेउ जाई।रामचन्द्र बनवास कराई॥**

**एहि विधि रावन वध तुम कीन्हा।सुर नर मुनि सब कहुं सुख दीन्हा॥**

**को समरथ तव यश गुन गाना।निगम अनादि अनंत बखाना॥**

**विष्णु रूद्र अज सकहिं न मारी।जिनकी हो तुम रक्षाकारी॥**

**रक्त दन्तिका और शताक्षी।नाम अपार है दानव भक्षी॥**

**दुर्गम काज धरा पर कीन्हा।दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा॥**

**दुर्ग आदि हरनी तू माता।कृपा करहु जब जब सुखदाता॥**

**नृप कोपित जो मारन चाहै।कानन में घेरे मृग नाहै॥**

**सागर मध्य पोत के भंगे।अति तूफान नहिं कोऊ संगे॥**

**भूत प्रेत बाधा या दुःख में।हो दरिद्र अथवा संकट में॥**

**नाम जपे मंगल सब होई।संशय इसमें करइ न कोई॥**

**पुत्रहीन जो आतुर भाई।सबै छांड़ि पूजें एहि माई॥**

**करै पाठ नित यह चालीसा।होय पुत्र सुन्दर गुण ईसा॥**

**धूपादिक नैवेद्य चढावै।संकट रहित अवश्य हो जावै॥**

**भक्ति मातु की करै हमेशा।निकट न आवै ताहि कलेशा॥**

**बंदी पाठ करें शत बारा।बंदी पाश दूर हो सारा॥**

**करहु कृपा भवमुक्ति भवानी।मो कहं दास सदा निज जानी॥**

**॥ दोहा ॥**

**माता सूरज कान्ति तव,अंधकार मम रूप।**

**डूबन ते रक्षा करहु,परूं न मैं भव-कूप॥**

**बल बुद्धि विद्या देहुं मोहि,सुनहु सरस्वति मातु।**

**अधम रामसागरहिं तुम,आश्रय देउ पुनातु॥**

**allbhajan.com**